रिकॉर्ड :– इस पाप की दुनिया..... "ऊँ" पिताश्री 14/9/1965

ओम् शान्ति। बच्चे जानते हैं कि मनुष्य गुरू, तीर्थ यात्रा आदि करते हैं। किसलिए? भक्ति करते हैं कि भगवान आकर भक्ति रूपी दुर्गति मार्ग से सद्गति मार्ग में ले (जा)वें, जहाँ शांति, सुख, चैन, सब कुछ हो। बाप समझाते हैं– बच्चे, तुम शिवालय के रहने वाले थे। तुम पावन श्रेष्टाचारी देवी–देवताएँ थे। तुम्हारी महिमा ही है सर्वगुण सम्पन्न... अंहिसा परमोधर्म देवी–देवता। वो है डबल अहिंसक। सतयुग में विकार की हिंसा होती नहीं। हिंसा अर्थात् किस भी प्रकार का किसको दुख देना। बच्चों को समझाया है यह है दुखधाम। तुम अभी चलते हो सुखधाम में। यह पतित, पुरानी, भ्रष्टाचारी दुनिया है। इनको वैश्यालय कहा जाता है; क्योंकि विषय सागर में गोता खाते हैं। इसी भारत को शिवालय, पावन, श्रेष्टाचारी दुनिया भी कहते थे। वहाँ विकार बिल्कुल होते नहीं। यह है विषियस वर्ल्ड। वो है वाइसलेस वर्ल्ड। वर्ल्ड तो एक ही है। नई दुनिया वाइसलेस, पुरानी दुनिया विषियस। नई ही पुरानी होती है। बाकी दूसरी कोई दुनिया नहीं है। जो शिवालय था अब वैश्यालय हुआ है। सब कहते हैं हमको पावन बनाय शिवालय में ले चलो। शिवालय अर्थात् जहाँ शिवबाबा और हम आत्मा रहती हैं; परन्तु वास्तव में शिवालय है स्वर्ग। शिवबाबा ने जो स्वर्ग रचा, जहाँ हम देवी–देवताएँ रहते हैं, वो भी शिवालय था। जैसे नाम रखते हैं नेहरू पार्क आदि। यह भी है शिवबाबा का स्थापन किया हुआ शिवालय। वो है दैवी गार्डन। यह है रावण का फॉरेस्ट। रावण राज्य। यह जो गोला है, उसके नीचे लिख देना चाहिए यह है पतित भ्रष्टाचारी वैश्यालय और यह पावन श्रेष्टाचारी शिवालय। कब से कब तक, वो टाइम भी लिखना चाहिए। 2500 वर्ष से 5000 वर्ष तक। अक्षर पूरे लिखने चाहिए। शिवालय के बाद फिर नीचे उतरना होता है। अभी तुम्हारी 100% चढ़ती कला है। इस जन्म को अमूल्य जीवन कहा जाता है; क्योंकि तुम इस समय ईश्वर के बने हो। ईश्वर की गोद में हो। फिर आवेंगे दैवी गोद में। यहाँ तुम सर्विस करते हो। काँटों को फूल बनाते हो। अंधों को रास्ता बताते हो। सेवा करते हो। इसलिए तुम्हारा नाम गाया जाता है। यह दिलवाला मंदिर तुम्हारा यादगार है। तुम जीते जी यहाँ बैठे हो। वो जड़ यादगार है, जो भक्तिमार्ग में बना है। शिवबाबा भी है, आदिदेव–आदिदेवी, अधर कन्या, कुवारी कन्या भी है। ऊपर में स्वर्ग भी है। भारत ही स्वर्ग था, अभी नर्क बना है। अभी बाप तुम बच्चों को स्वर्गवासी बनाते हैं। कहते हैं, अपने गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए तुम कमल फूल समान पवित्र रहो। तुम हो बी०के०कुमारियाँ। डाडे से स्वर्ग का वर्सा पाने लिए डाडे को याद करते हो और वर्से को याद करते हो। इसमें परहेज का बंधन है। मनुष्य तो गंदी चीज़ें खाने पर, बाइसकोप आदि देखने पर हिरे हुए हैं। बाइसकोप देखना बड़ा खराब है। संग का रंग लग जाता है। वहाँ शैतानी ही दिखलाते हैं। ब्रह्मचारी वो देख खराब हो जाते हैं। इसलिए बच्चों को वाइसकोप आदि देखने की मनाह की जाती है। सी नो वाइसकोप। नानसेंस बातें मत सुनो। जो कुछ शास्त्र आदि पढ़े हो वो भूल जाओ। तुम अशरीरी बनते हो तो फिर देह का भान छूट जाता है। गोया तुम जीते जी मरते हो। अभी तुम समझते हो, यह शास्त्र आदि पढ़ते–2, भक्ति में उतरते–2 बिल्कुल ही तमोप्रधान बने हो। उतरती कला है ना। जैसे यह मकान अभी नया है। आधा टाइम पूरा होने से फिर उनकी उतरती कला कहेंगे। देवताएँ भी 16 कला से 14–12 कला में उतरते आते हैं। आधा कल्प है ब्रह्मा का दिन, आधा कल्प है ब्रह्मा की रात। आधा कल्प ज्ञान की प्रालब्ध। अज्ञान को अंधेरा, ज्ञान को सोझरा कहा जाता है। ज्ञान अंजन सत्गुरु... वो सब कलियुगी गुरु हैं। वो कब सत बोलते ही नहीं। सत को जानते ही नहीं। सत कहा जाता है बाप को। बाकी सब हैं झूठे गुरु। झूठी माया... यह कलियुग को कहेंगे ना। नम्बरवार सब झूठे हैं। सबसे जास्ती झूठे हैं गुरु लोग, जो बड़े ते बड़े झूठ बोलते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी है और गीता का भगवान कृष्ण है। गीता को भी झूठा बना दिया है। यह दोनों कितने बड़े झूठ हैं। गुरु जिसका अंधला, चेला सत्यानाश। अभी भारत की सत्यानाश हुई पड़ी है। फिर सतगुरु को आना पड़ता है। वो तो सब भक्तिमार्ग के शास्त्र सुनाते हैं। अभी तुम्हारा अज्ञान अंधेर विनाश हुआ है। बाप को और रचना के

आदि–मध्य–अंत को तुम जान गए हैं। बुद्धि में रोशनी मिली है। शिव कौन है, फिर ब्र०वि०शं० कौन हैं, फिर ल०ना० का राज्य कैसे चला, कितना समय डिनायस्टी चली, फिर रावण की डिनायस्टी कैसे हुई, यह सब तुम्हारी बुद्धि में है। राजाएँ पतित तो हुए हैं ना, तब तो पावन राजाओं के मंदिर बनाए उन्हों की पूजा करते हैं। महिमा गाते हैं– आप सर्व गुण सम्पन्न... फिर अपन को कोई तो कहते हैं हम पापी, नीच हैं। विकारी कौन बने? जो पूज्य निर्विकारी थे वो ही पुजारी विकारी बन जाते हैं। आपे ही निर्विकारी पूज्य देवताएँ फिर आपे ही पुनर्जन्म लेते–2 वाममार्ग में आते हैं। यह सब ड्रामा का राज़ तुम बच्चों की बुद्धि में आया है। वो ही देवताओं का श्रेष्ट धर्म, श्रेष्ठ कर्म था। वो ही फिर विकारी बनते हैं तो धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन पड़ते हैं। तुम विचार करो, तुमने कितना चक्कर खाया है। पावन से पतित बने हो। अब फिर पतित से पावन बनना है। चक्कर ज़रूर फिरना है। द्वापर में रावण राज्य शुरू होता है। देवताएँ वाममार्ग में चले जाते हैं। फिर अनेक धर्म आ जाते हैं। सतयुग में सिर्फ सूर्यवंशी थे। फिर त्रेता में चंद्रवंशी। जब सूर्यवंशी थे तो चंद्रवंशी नहीं थे। चंद्रवंशी में सूर्यवंशी राज्य नहीं। वो पास्ट हो गया। फिर आता है रावण। तो पुजारी बन पड़ते हो। जिस शिवबाबा ने देवता बनाया उनकी पूजा शुरू करते हैं। सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं। किसने बनाया? वो ही जो पूज्य देवी–देवता थे, उन्होंने ही विकारी बनने बाद अव्यभिचारी भक्ति शुरू की। भक्ति भी सतो–रजो–तमो होते हैं ना। अभी है तमोप्रधान। कहते– कण–2 में, पत्थर–ठिक्कर में भगवान है। शिवलिंग को भी काला कर दिया है। खुद काले हुए हैं तो उनको भी काला, कृष्ण को भी काला बना देते हैं। कृष्ण का बचपन तो काला नहीं दिखाना चाहिए। बचपन भी काला तो नारायण को भी काला बना देते। यह सब बातें तुम पहले नहीं जानते थे। इनको ही कहा जाता है आयरन एज, काली दुनिया, सांवरी दुनिया। भारत सुंदर था। अब श्याम है। भारत गौरा था। गौरे देवी–देवताएँ रहते थे। अभी आयरन एज्ड भारत है। आत्मा में खाद पड़ने से जेवर भी खाद वाले बन पड़े हैं। यह भी बाबा ने समझाया है कृष्ण को ही श्याम–सुंदर कहते हैं। झूले में तो गौरे को झुलाते होंगे। मक्खन खिलाते होंगे। फिर श्री कृष्ण की आत्मा को ही भिन्न नाम–रूप, देश–काल 84 जन्म लेने पड़ते हैं। 84 जन्मों का वृतांत तुम बच्चे जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में है हम 84 जन्मों का चक्कर खाए अभी फिर से हम बाप से वर्सा ले रहे हैं मनुष्य से देवता बनने का। वहाँ तो सदैव सुख–चैन है। यहाँ भ(क्त) भगवान को याद करते हैं कि हमको फिर से इन दुखों से छुड़ाए सुखधाम–शांतिधाम ले चलो। उन(को) ही लिबरेटर और गाइड कहते हैं। तो यह बुद्धि में बैठ जाना चाहिए। भारत स्वर्ग था, ल०ना० का राज्य था, थोड़े मनुष्य थे और सभी आत्माएँ निराकारी दुनिया में थीं। तुम्हारी बुद्धि में सारा झाड़ और चक्कर का राज़ है। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी थी। अभी तो व्यभिचारी भक्ति हो गई है। आगे स्त्री को कहते थे, पति ही तुम्हारा गुरु ईश्वर है। आजकल स्त्री फिर पतित बनाने वालों गुरुओं के पाँव धोकर पीते हैं, सेवा करती हैं। जिन्होंने माताओं को विधवा बनाया वो ही माताएँ फिर उन्हों की जाकर पूजा करती है। कुछ भी समझते नहीं। अज्ञान होने कारण उन्हों को गुरु बनाए उन्हों को ही याद करते रहत, लॉकेट बनाय पहनते। बहुत गुरुओं की पूजा करते हैं। पति को भी छोड़ गुरु को पकड़ा गए नर्क में। स्वर्ग में तो गुरु ले नहीं जा सकते। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत की सद्गति से फिर दुर्गति कैसे होती है, यह बाप बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को सद्गति दे चला जाता हूँ। फिर आधा कल्प बाद रावण आकर श्राप देते हैं। श्राप से मनुष्य डरते हैं। यह सभी का गुप्त दुश्मन है, जिसका किसको भी पता नहीं पड़ता। बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों को वर्सा देता हूँ। वहाँ तुम बहुत सुखी रहते हो। गीत में भी कहते हैं ना– बाबा, ले चलो। एक ही बाप रचयिता है। बाकी सब रचना हैं। कृष्ण को किसने रचा? सबको रचने वाला प०पि०प० है। तुम देखते हो, बरोबर संगमयुग पर आकर शूद्र को ब्राह्मण बनाए फिर ब्राह्मण से देवता बनाते हैं। तुम बन रहे हो हूबहू कल्प पहले मुआफिक। बाबा पूछते हैं इसी ड्रेस में आगे कब मिले हो? कहते हैं, बाबा, कल्प–2 मिलते हैं आप से सुख का वर्सा (पाने)। अभी समझते हैं रावण ने श्राप दिया है। (अभी)

फिर हम बाप से वर पाने आए हैं। यह बातें बाप बिगर कोई समझा ना सके। सतसंग तो ढेर हैं। सब झूठ ही झूठ सुनाते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है, फिर ईश्वर को थोड़े ही भक्ति करनी है। तुम भी ईश्वर, हम भी ईश्वर, फिर हम माथा क्यों टेकें? सन्यासी लोग कहते हैं शिवोहम् तत् त्वम्। फिर पूजा करने की क्या दरकार? सब ईश्वर के रूप हैं फिर तुमको गुरु क्यों बनावें? अभी तुमको अक्ल आया है। शिवोहम् कोई मनुष्य कह ना सके। मुसलमान कोई सुने कि यह अपन को अल्लाह कहते हैं तो एकदम तलवार से मार डाले। अल्लाह सभी का बाप। तुम पतित भ्रष्टाचारी कैसे अपन को खुद कह सकते हो। जगत का गुरु तो एक ही है, जिसकी सब मनुष्य बंदगी करते हैं। यह ज्ञान कोई में है नहीं। गवर्मेन्ट ने साधु–समाज बनाई है कि तुम भ्रष्टाचार को श्रेष्टाचारी बनाओ। अब वो खुद ही नम्बरवन भ्रष्टाचारी वो फिर श्रेष्टाचारी कैसे बनावेंगे? यहाँ तो बाप भारत का प्राचीन ज्ञान और योग सिखाते हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, दो भूलें हैं नम्बरवन। गीता का भगवान कृष्ण कह दिया है। वास्तव में बाप तो एक ही है रचयिता। बाकी सब हैं रचना। रचना को रचना से कब वर्सा मिल ना सके। बाप से ही बच्चों को वर्सा मिलता है। निराकार बाप ही वर्सा देंगे। शिव जयन्ती गाते हैं ज़रूर बाप आया था और वर्सा दिया था। शिव जयन्ती के बाद है कृष्ण जयन्ती। वो लोग तो इन बातों को जानते ही नहीं। इस समय ही पवित्रता की राखी बाँधी जाती है। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होते हैं। जो श्री कृष्ण की वंशावली थी, जो अब असुरों की वंशावली बनी है। फिर ब्राह्मणों की वंशावली बन मनुष्य से देवता बनने सीख रहे हो। जब तक बी०के० ना बने शिवबाबा से वर्सा कैसे ले सकते। सीधी बात है ना। इन बातों को अच्छी रीति समझना है ना और समझाना है। बाप को अपना बनाना है। मेरा तो एक दूसरा ना कोई। गृहस्थ व्यवहार में रह बेहद के बाप को याद करना है। कोई देहधारी को याद ना करना है। शिवबाबा कहते हैं, माम् एकम् याद करो। बाप और वर्से को याद करो। इनको ही कहा जाता है मनमनाभव। भगवानुवाच्य माम् एकम् याद करो तो मुक्ति में चले जावेंगे। फिर चक्कर को याद करेंगे तो जीवनमुक्ति में। भगवानुवाच्य है ना। कृष्ण तो मनुष्य है ना। देवता ब्र०वि०शं० को कहा जाता है। कृष्ण का देवी–देवता धर्म है। है तो मनुष्य ना। देवताएँ हैं ही तीन ब्र०वि०शं०। कहते भी ब्रह्मा देवता नमः, विष्णु देवता नमः। कृष्ण देवता नमः नहीं कहेंगे। वो सूक्ष्मवतनवासी भी देवताएँ, कृष्ण भी देवता कहें तो रात–दिन का फर्क हो जाए। श्री कृष्ण दैवी गुणों वाला मनुष्य है जो फिर आसुरी गुण वाला बन जाता है। फिर दैवी गुण वाला बनता है। तुम भी ऐसे बनते हो। अच्छा, थोड़ा डोज़ ही ठीक है। बाप फिर भी बच्चों को कहते हैं माम् एकम् याद करो। बच्चे कहते हैं– बाबा, भूल जाते हैं। अरे, हे आत्मा! तुम मुझ बाप को कैसे भूल जाते हो। वो लौकिक माँ–बाप जो श्राप देने वाले हैं, उनको याद करते रहते हो और बेहद का वर्सा देने वाले बाप को भूल जाते हो। लौकिक बाप तो तुमको काम चिक्षा पर बिठाए कतलाम कराते हैं। मैं तुमको काम चिक्षा से उतार ज्ञान चिक्षा पर बिठाता हूँ। वो तुमको पतित बनाते हैं। हम तुमको ज्ञान चिक्षा पर बिठाए पावन बनाते हैं। दोनों को इकट्ठा बिठाते हैं; क्योंकि प्रवृत्तिमार्ग है ना। कन्या अगर पवित्र ना बनती तो उनको शादी करा देनी है। बच्चा अगर बाप की आज्ञा ना माने तो वो बच्चा कपूत ठहरा। फिर झगड़ा हो पड़ता है। कहते हैं यहाँ भाई–बहन बनाते हैं। अरे, तुम हिसाब करो। प्रजापिता ब्रह्मा के सब औलाद तो भाई–बहन ठहरे ना। भाई–बहन कब क्रिमिनल एसाल्ट कर ना सके। बहन–भाई तो बहन–भाई तो बनना ही पड़े। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमलफूल समान बन तुम बाप से वर्सा पा सकते हो। सारी दुनिया में ऐसा सतसंग कब होता नहीं।